8. श्रीअरविन्द का शिक्षा-दर्शन

श्रीअरविन्द प्रखर चिन्तक, मौलिक विचारक और सत्य के अन्वेषक थे। श्री अरविन्द दार्शनिक होने के साथ-साथ एक महान्‌शिक्षाविद भी थे। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों का ज्ञान हमें उनकी पुस्तकों- 'नेशनल सिस्टम ऑफ एजुकेशन' तथा 'ऑन एजुकेशन से प्राप्त होता है। उनके शिक्षा दर्शन का आधार आध्यात्मिक, साधना, योग तथा ब्रह्मचर्य है। श्री अरविन्द भौतिक संसार तथा मानव जीवन को सत्य मानते थे। इन्हीं विचारों ने श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन को भी प्रभावित किया। यही कारण है कि श्रीअरविन्द ने शिक्षा के सम्बन्ध में अपना एक व्यापक-दृष्टि कोण को अपना कर मानव के अन्तःकरण को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

शिक्षा-सम्बन्धी विचार : श्रीअरविन्द ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार में आध्यात्मिक साधना, योग तथा ब्रह्मचर्य को प्रमुख आधार बनाया है। अतः उनका कहना था कि जिस शिक्षा में ये तीनों तत्व शामिल है, उससे मनुष्य का पूर्ण विकास संभव है। श्री अरविन्द सूचनाओं के संग्रह को शिक्षा नहीं मानते हैं। सूचनायें केवल व्यक्ति के ज्ञान की वृद्धि की सामग्री है। श्री अरविन्द ने शिक्षा के व्यापक रूप का समर्थन करते हुए बतलाया कि शिक्षा का अर्थ मानव के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण करने में है। शिक्षा की परिभाषा देते हुए श्रीअरविन्द ने लिखा है, "सच्ची और वास्तविक शिक्षा वह है जो मानव की अंतर्निहित समस्त शक्तियों, बौद्धिक, शारीरिक, क्रियात्मक, नैतिक तथा आध्यात्मिक- का पूर्ण विकास करे।" इस तरह अपने शिक्षा दर्शन में श्री अरविन्द ने बच्चों के आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष रूप से बल दिया है तथा उसी शिक्षा को सही शिक्षा माना जो बच्चों के आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास में सहायक हो। आध्यात्मिक विकास ही सर्वांगीण विकास का द्योतक है और इसके बिना बच्चों की शिक्षा अधूरी रह जाती है। अपने शिक्षा दर्शन के शिक्षा सम्बन्धी विचार में श्रीअरविन्द ने मानव के अंतःकरण पर विशेषरूप से जोर दिया है क्योंकि व्यकित के अंतःकरण में चार तरह के पटल पाये जाते हैं वे है- चित्त, मानस, बुद्धि तथा ज्ञान।

चित्त : चित्त में मानव जीवन के पूर्व संचित संस्कार तथा वर्तमान अनुभव एकत्रित रहते हैं। इसे किसी तरह के प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है।

Scanned by CamScanner

मानस : मानस का कार्य ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त सूचना को ग्रहण करना तथा उसे विचारों और भावों में बदल देना है। श्रीअरविन्द के अनुसार, "मानस का कार्य विभाजन का है तथा सत्य को अंगों में बाँट कर देखने का है।"[2]

बुद्धि : बुद्धि विचार का वास्तविक साधन है जो ज्ञान को व्यवस्थित करता है। शिक्षा की दृष्टि से बुद्धि को महत्वपूर्ण माना जाता है।

ज्ञान : ज्ञान एक ऐसी शक्ति है जिसे अंर्तदृष्टि या अतिमानस कहा जाता है। इस शक्ति का पूर्ण विकास अभी तक नहीं हो पाया है इसका विकास धीरे-धीरे होते रहता है। इस शक्ति को विकसित करने के लिए बच्चों की रूचि के अनुकूल स्वाभाविक ढ़ंग से बढ़ने का अवसर देना जरूरी हो जाता है।

श्रीअरविन्द के अनुसार मनुष्य एक विकासशील प्राणी है। जो पशु से देवता और अतिमानस से बनने की क्षमता रखता है। अतः अपने विकास के लिए मानव खुद प्रयास करेगा इसके लिए केवल पूर्ण व्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है। अतः उनके अनुसार शिक्षण व्यवस्था में बालक की जरूरत है। श्रीअरविन्द का कहना है कि शिक्षण व्यवस्था में बालक की अभिरूचि का पूरा ख्याल रखना चाहिए। क्योंकि अभिरूचियों के आधार पर दी गयी शिक्षा से बालक की समस्त शक्तियों जैसे-स्मृति निर्णय, तर्क, कल्पना, चिन्तन आदि का विकास संभव होता है। श्रीअरविन्द इन शक्तियों को विकसित करने के लिए बच्चों को पूर्ण स्वतंत्रता देने की वकालत करते है। इससे साफ पता चलता है कि श्री अरविन्द अपने शिक्षा दर्शन में बच्चों को पूरी स्वतंत्रता देकर उसे सभी तरह के बन्धनों से मुक्त रखना चाहते हैं ताकि बालक स्वतंत्र रूप से अपनी विभिन्न शक्तियों का विकास कर सके। वे बच्चों को उन सभी विषयों की शिक्षा देने की सलाह देते थे जिनमें शिक्षा से सम्बन्धित अभिव्यक्ति तथा जीवन की क्रियाशीलता के गुण निहित हो। श्रीअरविन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचार में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर भी विचार-विमर्श किया गया है जो इस प्रकार है।

नैतिक शिक्षा : श्रीअरविन्द के अनुसार आध्यात्मिक विकास के लिए नैतिक विकास अति-आवश्यक है। नैतिक विकास के लिए श्रीअरविन्द अच्छे शारीरिक मानसिक तथा भावात्मक आदतों का निर्माण करने की सलाह बच्चों को देते हैं। नैतिक विकास के लिए नैतिक शिक्षा आवश्यक हो जाता है। शिक्षकों को भी शुद्ध आचरण का प्रतीक बनकर बच्चों को पूर्णता की ओर अग्रसर करना चाहिए। इतना ही नहीं, नैतिक शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा में शामिल कर उसे महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए ताकि देश से भ्रष्टाचार का निवारण संभव हो। इस तरह नैतिक शिक्षा को श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार में विशेष स्थान दिया है।

Scanned by CamScanner

धार्मिक शिक्षा : आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास के लिए धार्मिक शिक्षा का होना आवश्यक है। देश की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अनिवार्य रूप से धार्मिक शिक्षा को शामिल किया जाना चाहिए। आज के विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए तथा विभिन्न धर्मों की शिक्षा दी जानी चाहिए। आज की शिक्षा में धार्मिक शिक्षा को शामिल कर ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे बच्चे ईश्वर की प्राप्ति, ईश्वर का ज्ञान, मानव कल्यारण तथा देश का कल्याण करने में अपनी आदर्श भूमिका का परिचय दे सके। बच्चे धार्मिक शिक्षा के माध्यम से आत्म विकास का हर संभव प्रयास करे। धार्मिक शिक्षा के अभाव में कोई व्यक्ति आध्यात्मिक विकास करने में सक्षम नहीं हो सकता है। अतएव आज की शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा को भी शामिल किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा : श्रीअरविन्द कट्टर राष्ट्रवादी थे। अतः अपनी शिक्षा विचार में राष्ट्रीय शिक्षा का पूर्णतः समर्थन किया है। श्री अरविन्द देश को स्वतंत्र कराने तथा विदेशी शिक्षा का भारतीयकरण करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा की रूप-रेखा तैयार करने का कार्य किया। राष्ट्रीय शिक्षा का मतलब उस शिक्षा से होता है जो राष्ट्र के नियंत्रण में राष्ट्र के लोगों को राष्ट्रीय पद्धति से दी जाती है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा अपने ही विश्वासों, मूल्यों तथा आत्मा के आधार पर बनाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा में मुख्य रूप से भूत, भविष्य तथा वर्त्तमान ज्ञान एवं विज्ञान को प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा में संकीर्णता का कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार में नैतिक शिक्षा तथा धार्मिक शिक्षा के साथ राष्ट्रीय शिक्षा को स्थान देकर अपने शिक्षा दर्शन में चार चाँद लगा दिया है। जिससे उनका शिक्षा दर्शन और अधिक आकर्षक और सशक्त हो जाता है।

शिक्षा दर्शन के सिद्धांत : श्रीअरविन्द के शिक्षा-दर्शन के निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांत है–

- शिक्षा का उद्देश्य अन्तःकरण का विकास होना चाहिए।
- शिक्षा को बच्चे के मनोवृतियों तथा रूचियों के अनुकूल होनी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से मातृभाषा होनी चाहिए।
- शिक्षा के द्वारा बालक का नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होना चाहिए।
- शिक्षा का एक मात्र केन्द्र बच्चे ही होना चाहिए।
- शिक्षा को रोचक तथा आकर्षक बनाया जाना चाहिए।
- शिक्षा के द्वारा बच्चों के ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण होना चाहिए।
- शिक्षा में शिक्षक का स्थान, मित्र, निर्देशक तथा पथ प्रदर्शक की तरह रहना चाहिए।
- शिक्षा के द्वारा बच्चों के सारी शक्तियों का विकास होना चाहिए जिससे कि बच्चों को पूर्ण मनुष्यत्व की प्राप्ति हो सके।

Scanned by CamScanner

04 इस तरह श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन के ये सभी सिद्धांत महत्वपूर्ण और आवश्यक जान पड़ते है।

शिक्षा के उद्देश्य : श्रीअरविन्द अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन निम्नलिखत ढ़ंग से करते हैं।

शारीरिक विकास : श्रीअरविन्द के अनुसार शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों का शारीरिक विकास करना है। शारीरिक विकास के साथ ही बच्चों के शारीरिक शुद्धि को भी शामिल किया गया है क्योंकि शारीरिक शुद्धि के बिना बच्चों का आध्यात्मिक विकास असंभव है। शारीरिक विकास तथा शारीरिक शुद्धि से ही धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास की प्राप्ति संभव है। अतः शरीर को स्वस्थ और पवित्र रहना अति आवश्यक है। इस तरह शारीरिक विकास शिक्षा का अत्यंत ही महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

ज्ञानेन्द्रियों का विकास : शरीर के विकास के साथ-साथ ज्ञानेन्द्रियों का विकास भी बच्चों में होना आवश्यक है। ज्ञानेन्द्रियों के विकास के लिए स्नायु, चित्त तथा मानस को बिल्कुल शुद्ध और पवित्र होना चाहिए, इसीलिए शिक्षा तथा साधना के द्वारा बच्चों को अपने ज्ञानेन्द्रियों के विकास के लिए पहले स्नायु, चित्त तथा मानस को शुद्ध करने का अभ्यास करना चाहिए। अतः ज्ञानेन्द्रियों का विकास बच्चों के शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है।

मानसिक विकास : शरीर और ज्ञानेन्द्रियों के विकास के साथ मानसिक विकास की जरूरत पड़ती है। श्रीअरविन्द के शब्दों में, "शिक्षा का बालक की रूचियों तथा अभिरूचियों के आधार पर समस्त मानसिक शक्तियों का विकास करना चाहिए।"[3] इस तरह मानसिक विकास शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

नैतिकता का विकास : बच्चों की शिक्षा में नैतिक गुणों के साथ ही नैतिकता का विकास करना आवश्यक है। नैतिकता का मतलब है, व्यक्ति की प्रकृति, आदत और भावनायें, शिक्षा के द्वारा बच्चों के आदत, प्रकृति तथा भावनाओं को शुद्ध एवं सुंदर बनाये जाने का प्रयास होना चाहिए, ताकि बच्चे आगे चलकर उत्तम जीवन व्यतीत कर सके तथा सबके साथ उनके दिलों में दया, प्रेम, सहानुभूति की भावना जाग्रत हो सके। नैतिकता से विकास के लिए बच्चों में धार्मिक शिक्षा के प्रति आवश्यक रूप अभिरूचि जाग्रत करना चाहिए। साथ ही इसके लिए उत्तम आदर्शों का अनुकरण, सत्संग तथा प्रवचन जैसे कार्यक्रमों के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

अंतःकरण का विकास : अंतःकरण का विकास करना श्रीअरविन्द के शिक्षा दर्शन का एक महत्वपूर्ण और प्रमुख उद्देश्य माना जाता है। इसके लिए अंतःकरण के चार स्तरों जैसे- चित्त, मानस, बुद्धि तथा ज्ञान आदि का विकास होना भी आवश्यक है। इन

Scanned by CamScanner

सबों के विकास से ही अंतःकरण का विकास संभव हो सकता है। इस तरह अंतकरण का विकास करना श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन का मुख्य उद्देश्य होता है।

आध्यात्मिक विकास : श्रीअरविन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में अध्यात्मवाद को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। साथ ही, व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किया है। श्रीअरविन्द के शब्दों में, "प्रत्येक व्यक्ति में कुछ दैवीय अंश होता है। इसे खोजना विकसित करना तथा पूर्णता की ओर ले जाना शिक्षा का प्रमुख कार्य हैं।"[4] दैविक जीवन ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है और आध्यात्मिक विकास का एक मात्र लक्ष्य है- दैविक जीवन की प्राप्ति।"[5] श्रीअरविन्द की ऐसी मान्यता है कि धरती पर दैवीय जीवन का अविर्भाव अवश्यंभावी है। किन्तु इसको जल्दी लाया जा सकता है- आध्यात्मिक क्रियाकलापों से।[6] श्रीअरविन्द का कहना है कि योग के माध्यम से शीघ्रताशीघ्र धरती पर दैविक जीवन लाया जा सकता है क्यों कि योग मानव जीवन की आध्यात्मिकता को तेजी से ला सकता है।[7] इस तरह आध्याम्कि विकास व्यक्ति के दैवी जीवन से सम्बन्धित रहता है जो मानव को दिव्य पुरूष बना देता है। मानस को अति मानस बना देता है। अतः अध्यात्मिक विकास शिक्षा का अति आवश्यक उद्देश्य है।

विशिष्ट क्षमताओं का विकास : हर व्यक्ति में कुछ न कुछ विशिष्ट शक्तियाँ गुण और क्षमतायें विद्यमान रहती है इन विशिष्ट शक्तियों, गुणों तथा क्षमताओं का विकास करना आवश्यक हो जाता है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के इन विशिष्ट क्षमताओं का विकास संभव है ताकि व्यक्ति अपना आध्यात्मिक विकास कर पूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त करने में सक्षम हो सके। इस तरह, श्रीअरविन्द के शिक्षा दर्शन में उपरोक्त शिक्षा के उद्देश्य अत्यंत ही सटीक, उपयोगी और व्यावहारिक जान पड़ते हैं।

शिक्षा के पाठ्यक्रम : श्रीअरविन्द अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों के आधार पर पाठ्यक्रम निर्माण से सम्बन्धित निम्नलिखित सिद्धांतों का उल्लेख किया है-

- शिक्षा के पाठ्यक्रम को रोचक होना चाहिए।
- शिक्षा के पाठ्यक्रम में उन सभी विषयों का समावेश होना चाहिए जिनमें क्रियाशीलता के गुण विद्यमान हो।
- शिक्षा के पाठ्यक्रम ऐसे हों जो विश्व सम्बन्धी ज्ञान देने में बच्चो की सहायता कर सके।
- शिक्षा के पाठ्यक्रम में वैसे विषयों को शामिल करना आवश्यक है जो बच्चों को आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों क्षेत्रों का विकास करने में सहायक हो।

शिक्षा के उपरोक्त पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी सिद्धांतों के आधार पर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के लिए व्यापक पाठ्यक्रम निर्माण की योजना बनायी जो इस प्रकार है-

Scanned by CamScanner

प्राथमिक स्तर : प्राथमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में मातृभाषा, अंग्रेजी, गणित, सामान्य विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इतिहास, चित्रकला और फ्रेंच विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की सलाह दिया।

माध्यमिक स्तर : माध्यमिक स्तर की शिक्षा के पाठ्यक्रम में मातृभाषा, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन, स्वास्थ्य विज्ञान, भौतिकशास्त्र, रसायन शास्त्र, वनस्पति विज्ञान भूगर्भ विज्ञान,चित्रकला, जीव विज्ञान और फ्रेंच विषयों को शामिल करना चाहिए।

विश्वविद्यालय स्तर : विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा में अंग्रेजी साहित्य, फ्रेंच साहित्य, भारतीय दर्शन, सभ्यता का इतिहास, विज्ञान का इतिहास, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशासत्र, अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा विश्व एकीकरण को शामिल किया जाना चाहिए।

इस तरह श्रीअरविन्द ने शिक्षा के पाठ्यक्रम को व्यापक और राष्ट्रीय बनाने का यथासंभव प्रयास किया है।

शिक्षण विधि : श्रीअरविन्द के शिक्षा दर्शन में शिक्षण विधि के संदर्भ में बच्चों की शिक्षा देने की प्रक्रिया पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। बच्चों के खुद के प्रयास तथा अपनी अनुभव को शिक्षा विधि में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। स्वप्रयास तथा स्वानुभव के द्वारा दी गयी शिक्षा अधिक स्थायी तथा उपयोगी सिद्ध हो सकती है। श्रीअरविन्द ने अपनी शिक्षण विधि में प्रेम तथा सहानुभूति से सम्बन्धित वातावरण को अधिक उपयुक्त मानते हैं। इस तरह के वातावरण में बच्चों का मन पढ़ने तथा अध्ययन करने में अधिक लगता है। उसमें ज्ञान प्राप्ति की इच्छा और अधिक बलवती हो जाती है।'करके सीखना' तथा 'परस्पर सहयोग' से सीखना आदि को भी श्रीअरविन्द ने अपने शिक्षण विधि में प्रमुख आधार बनाया है तथा बच्चों की क्रियात्मक विधि पर विशेष रूप से बल दिया है।

श्रीअरविन्द के शिक्षा दर्शन में योग की क्रिया को भी सीखने की सर्वोत्तम विधि माना गया है योग की क्रिया को स्वक्रिया, स्वचिन्तन तथा तर्क पर आधारित होना चाहिए, योग के बारे में श्रीअरविन्द ने लिखा है, "Thus yoga implies not only the realisation of God, but an entire conse cration and change of the inner and outer life till it is fit to manifest a divine consciousness and become part of a divine work"[8]

योग के स्वरूप की चर्चा करते हुए श्रीअरविन्द ने लिखा है "योग मानव की सम्पूर्णता में ईश्वरत्व का उत्प्रवाह है।"[9] श्रीअरविन्द के शब्दों में, "Yoga means union with the Divine a union either transcendenstal (above the uni-

Scanned by CamScanner

विद्यालय : श्रीअरविन्द अपने शिक्षा दर्शन में विद्यालय की आवश्यकता पर जोर देते हैं। उनका कहना है कि बच्चों के शारीरिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक विकास के लिए विद्यालय सहायक सिद्ध होता है। विद्यालयों में विभिन्न विषयों और भाषाओं जैसे विज्ञान, इतिहास, गणित, साहित्य, संस्कृति आदि के शिक्षण की सुव्यवस्था रहनी चाहिए। विद्यालय को अनुशासन के प्रशिक्षण का सुलभ केन्द्र माना जाता है। आध्यात्मिक विकास के लिए बच्चों में चिन्तन, मनन, श्रम, मानव सेवा आदि करने का अवसर विद्यालय के माध्यम से ही मिलना चाहिए। विद्यालयों में धर्म, संस्कृति, भाषा आदि के अध्ययन की भी सुविधायें दी जानी चाहिए। विकास के लिए विद्यालय में सभी बच्चों को समान अवसर मिलना चाहिए। विद्यालय शोर-गुल से दूर प्राकृतिक प्रांगण में अवस्थित होना चाहिए, साथ ही विद्यालय का वातावरण विश्व-बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत रहना चाहिए। इस तरह श्रीअरविन्द ने विद्यालय की आवश्यकता का पुरजोर समर्थन किया है।

शिक्षक और विद्यार्थी का स्थान : श्रीअरविन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षक तथा विद्यार्थी का क्या स्थान है? इसका स्पष्ट विवेचन किया है। अपनी शिक्षा व्यवस्था में श्री अरविन्द ने शिक्षक का स्थान गौण रखते हुए उसे केवल निर्देशक, पथ प्रदर्शक, और सहायक के रूप में कार्य करने की सलाह देते हैं। शिक्षक को केवल छात्र की सहायता करना है। उसे राह दिखलाना है। छात्र की अभिरूचियों के अनुसार शिक्षा की सामग्री का संकलन कर उसे प्रस्तुत करना है। शिक्षक का काम छात्रों पर ज्ञान को लादना नहीं है बल्कि उसे स्व-शिक्षा केलिए तैयार करना है, उसे उत्प्रेरित करना है। ताकि छात्र का विकास उनकी प्रकृति, स्वभाव तथा अभिरूचि के अनुसार हो सके। इस तरह श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा दर्शन में छात्र को ही केन्द्र मानकर उसे प्रमुख स्थान प्रदान किया है और शिक्षक का स्थान गौण रखा है। शिक्षा के द्वारा बच्चों के शारीरिक मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा धार्मिक विकास करना है। अतः बच्चों को ही शिक्षा का एक मात्र केन्द्र बिन्दु मानकर शिक्षक को बच्चों के बहुमुखी विकास में केवल सहायता करना है। बच्चों में अंतर्निहित क्षमताओं को अभिव्यक्त करने में सहारा देना है। मानव की अंतर्निहित पूर्णता को व्यक्त करना ही शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य है। मानस को अतिमानस, मानव को महामानव तथा पुरूष को दिव्य पुरूष बनाना ही शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इस तरह बच्चों में दिव्य गुणों को विकसित करने का प्रयास करना शिक्षकों का महत्वपूर्ण कार्य है। इस तरह श्रीअरविन्द छात्र को प्राथमिक तथा शिक्षक को गौण स्थान पर रखकर छात्रों में गौरव गरिमा का भाव भरने का प्रयास करते हैं। यही शिक्षा का मूल मंत्र भी होना चाहिए।

श्रीअरविन्द के शिक्षा दर्शन का विवेचन करने के बाद हम पाते हैं कि शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत ही व्यापक था। उन्होंने शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के भौतिक,

Scanned by CamScanner

04

एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो योगी, शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक के रूप में प्रसिद्ध हैं।" उनका शिक्षा दर्शन मानव को अति-मानव तथा पूर्ण मनुष्यत्व के रूप में विकसित करने की क्षमता रखता है, मानव का अति मानव बनना, पुरुष का दिव्य पुरूष बनना और पूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त करना ही शिक्षा का परम उद्देश्य है। चरम परिणति है। यही शिक्षा का एक मात्र मूलमंत्र है। अतः आज की शिक्षा व्यवस्था में श्री अरविन्द के शिक्षा दर्शन का योगदान विशेष रूप से महत्व रखता है।

Scanned by CamScanner